26.18.: किं व्याहरसि जितो न व्याहरिष्यसि; 1.20.: वाचं व्याजहार नलम्; 3.18.: न तास् तं शक्नुवन्ति स्म व्याहर्तुम् अपि किञ्चन· — प्रश्नान् व्याहर्तुम् interrogationes dissolvere. MAH. 3.12466. 2) vociferari, clamare. DR. 6.2.: श्रुत्वा गिरो व्याहरताम् मृगाणाम्·

c. आ praef. अभि + वि pronuntiare. MAN. 2.172.

c. आ praef. प्र + वि praedicere. MAH. 1.7240.: एवम् प्रव्याहृतम् पूर्वम् मम मात्रा·

c. आ praef. सम् 1) colligere. MAH. 1.6951.: तत्र भैक्ष्यं समाजह्रुः· 2) secum ducere. SA. 3.2.: वृद्धान् द्विजान् सर्वान् ... समाहृत्य· 3) offerre, facere *sacrificium* (v. आहृ sgf. 4.). R. Schl. I. 58.4.: समाहर्तुङ् क्रतुम्· 4) delere, extinguere. BH. 11.32.: कालो ऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धो लोकान् समाहर्तुम् इह प्रवृत्तः·

c. उत् 1) promere, extrahere. RAGH. 2.30.: शरम् ... निषङ्गाद् उद्धर्तुम् ऐषत्; UR. 4.2. *infr.*: उद्धरेन् नो हृदयशल्यम्; MAH. 1.3299.: माम् पतिताम् अस्मात् कूपाद् उद्धर्तुम् अर्हसि; 2.2293.: कौरवार्णवमग्नम् माम् उद्धरस्व; 3.141.: उद्धृता ह्य् आपदः प्रजाः; MAN. 4.58.: दक्षिणम् पाणिम् उद्धरेत् (schol. बहिष्कुर्यात्· 2) evellere, avellere. MAN. 7.110. N. 16.13. 3) exstirpare, delere. MAH. 1.5719.: सपत्नान् ममो ’द्धर; RAGH. 2.30. 4) erigere. BH. 6.5.: उद्धरेद् आत्मना ”त्मानन् ना ”त्मानम् अवसादयेत्· — *Caus.* 1) facere ut quis extrahat. RAGH. 9.78. 2) erigere, sublevare. MAH. 3.10946.: तस्याश् चो ’द्धार्यमानायाम् (वसुमत्याम्)·

c. उत् praef. अभि erigere, *inde* accumulare, coacervare. MR. 120.7.: विप्रस्त्वं न हरामि काञ्चनम् अथो यज्ञार्थम् अभ्युद्धृतम्· — *Caus.* eripere. MAH. 3.13326.

c. उत् praef. प्र erigere, sublevare. R. Schl. II. 110.4.

c. उत् praef. सम् 1) promere, extrahere. SA. 5.17.6.43. 2) exstirpare (evellere), delere. MAH. 1.3821. 3) erigere, sublevare. MAH. 3.10946. — TROP. MAH. 1.4271.: नष्टञ्च भारतवंशम् पुनर् एव समुद्धर·

c. उप 1) afferre. MAH. 1.7208. SAK. 37.2. *infr.* 2) offerre. BH. 9.25.: तद् अहम् भक्त्युपहृतम् अश्नामि· — यज्ञम् उपहृ° sacrificium facere. MAH. 3.8379. (v. हृ praef. आ). 3) exstirpare, delere. MAH. 2.861.: त्वयाचो ’पहृता राजन् क्षत्रियाः· — *Caus.* afferendum curare. R. Schl. I. 20.9.

c. उप praef. सम् समुपहर्तुं यज्ञम् offerre, facere sacrificium. R. Schl. I. 40.2.

c. निस् 1) promere, extrahere, evellere. MAH. 3.16485. 6033. 2) efferre. MAN. 5.91. 10.55. 8.399.

c. परि 1) *in dial. Vêd.* amplecti. RIGV. 61.8. 2) demere, auferre. R. ed. Ser. II.: सुखम् परिहृतङ् कुले ऽस्मिन्· 3) relinquere, deserere. R. Schl. II. 48.20.: यया पुत्रश्च भर्ता च त्यक्तौ ... कं सा परिहरेद् अन्यम्· 4) evitare. BH. 2.27.: अपरिहार्ये ऽर्थे न त्वं शोचितुम् अर्हसि; MAH. 3.389. HIT. 22.1. 5) retinere, cohibere, celare. MR. 26.12.: यद् एव परिहर्तव्यन् तद् एवो ’दाहरति मूर्खः; SAK. 53.16.

c. प्र 1) pulsare, ferire, tundere, vulnerare, *c. loc.* H. 3.21.: मय्य् एव प्रहरेर् हि त्वन् न स्त्रियं हन्तुम् अर्हसि; SAK. 5.21.: आर्तत्राणाय वः शस्त्रन् न प्रहर्तुम् अनागसि; RAGH. 2.62.: मयि ना ’न्तको ऽपि प्रभुः प्रहर्तुम् किम् उता ’न्यहिंस्राः; DR. 9.4.: पदा मूर्ध्नि ... प्राहरद् विलपिष्यतः; MR. 122.1. 2) jaculari, emittere. शरान् कस्मैचित् sagittas in alquem. MAH. 3.1584.: प्रहरस्व शरान्; 3.10387.: ततो ऽस्मै प्राहरद् वज्रम्· 3) adoriri, oppugnare, impugnare *aliquem, c. loc. vel acc.* RAGH. 7.56.: सर्वबलाङ्गैः ... भूमिपालास् तस्मिन् प्रजह्रुः; MAH. 4.1107.: त्रिगर्तम् प्राहरत्· — Pugnare. MAH. 3.15168.: प्रहरिष्यन्ति विवशाः स्नेहम् उत्सृज्य; H. 3.21.: प्रहरतां वरः· *V. sq.* et प्रहर्तृ·

c. प्र praef. सम् pugnare. MAH. 3.15167.: युधि सम्प्रहरिष्यन्तः·

c. वि 1) abripere, abstrahere. MAH. 1.5140.: कालो वै ’नं विहरति क्रोधो वै ’नं हरत्य् उत· 2) gaudere, voluptate frui, ludere. SU. 4.3.: निरुद्योगौ तदा भूत्वा विजह्राते ऽमराव् इव; DR. 1.1.: तस्मिन् बहुमृगे ऽरण्ये अटमानाः ... विजह्रुस् ते यथा ’मराः; N. 5.46.: वनेषू ’पवनेषु च दमयन्त्या सह नलो विजहारा ’मरोपमः; 5.48. — MAN. 7.221.: भुक्तवान् विहरेच् चै ’व स्त्री-